तीर्थाटन प्रदीपिका

अर्थात्

भारतवर्ष के मुख्य तीर्थों और बड़े बड़े
नगर और शहरों का वृत्तान्त

जिस को

अबदुर्रशीद पुस्तकालयाध्यक्ष ने रेलवे
बोर्ड के हुक्म से बनाया।

सन १९०८। सम्बत् १९६४ वि०

अवध रुहेलखण्ड रेलवे यन्त्रालय लखनऊ में छपा।
जूलाई सन् १९०९ ई० ॥

तृतीय बार]   [छपी ३०००

गांव में देशी लोगों के आश्रम के लिये धर्मशाला है और बटाला स्टेशन पर यक्के सवारी के लिये मिलते हैं ॥

बटाला पंजाब के नगर अमृतसर से २४ मील है तीसरे दर्जे का किराया ।)॥ है ॥

अञ्जीकल ।

मद्रास रेल्वे का बड़ी लायन पर यह आख़िरी स्टेशन है । पहिले दूसरे और तीसरे दर्जे के मुसाफ़िरों के वास्ते वेटिंगरूम [मुसाफ़िरखाने] बने हुये हैं स्टेशन बलिया पट्टम के क़रीब बना हुआ है जो एक छोटासा व्योपार का शहर है और कनानोर से पांच मील क़रीब पूर्व दक्षिण की तरफ़ को वाक़े है स्टेशन से क़रीब एक मील के फ़ासले पर एक मशहूर मन्दिर है और चराकल में राजा चराकल का बनाया एक बड़ा तालाब और देसी मुसाफ़िरों के वास्ते एक बड़ा चत्तरम यानि धर्मशाला है इस चत्तरम में ब्राह्मणों को मुफ्त खाना मिलता है यह शहर एक बड़े दरिया के किनारे पर वाक़े है जो यहां से ४ मील के फ़ासले पर समुद्र में जा मिलता है । इस जगह लकड़ी, काली मिर्च, नारियल और अनाज बहुत होता है । बहरी महसूल खाना स्टेशन से क़रीब ३ मील है ॥

अञ्जीकल मद्रास से ४७४ मील है और तीसरे दर्जे का किराया ८) है ॥

अयुध्या ।

अवध के ज़िला फ़ैज़ाबाद में एक बड़ा पुराना शहर घागरा दरिया के किनारे पर जिसको पिछले ज़माने में सर्जू कहते थे । अवध

रुहेलखंड रैलवे पर मुगल सराय से १२६ लखनऊ से ८४ और इलाहाबाद से १०४ मील के फ़ासले पर वाक़े है तीसरे दर्जे का किराया १॥) आना १=)। आना १)॥। है। पुराना शहर अब अलोप होगया। लेकिन खंडर बाक़ी हैं पहले ज़माने में अयुध्या बड़ा भारी शहर था कहते हैं कि इसका अहाता १२ योजन यानी ९६ मील था। कौशल्या राज्य में राजा दशरथ की राजधानी थी। राजा दशरथ राजा रामचन्द्र जी के पिता थे और रामचन्द्र जी रामायण के सूरमा थे। चन्द्रबंशी खानदान की बर्बादी पर यह शहर बर्बाद होगया और राज कुटुम्ब तित्तर बित्तर होगया कहते हैं कि राजा बिक्रमाजीत ने जो सन् ईस्वी से ५७ बर्ष पहिले हुए हैं इस पुराने शहर का और उन जगहों का जो रामचन्द्र जी के सबब पवित्र समझी जाती हैं पता लगाया इनमें सब से बड़े रामकोट यानी राजा का महल नगेशरनाथ का मन्दिर जो महादेव जी के नाम पर है मनापर्ब्बत दर्शनसिहं या मानसिहं का मन्दिर और हनुमान गढ़ी हैं। कौशल्या बुद्धधर्म के सबब भी मशहूर है चीनी यात्री हियून सग जो सातवीं सदी में आया लिखता है कि यहां पर बुद्ध लोगों के २० मन्दिर। ३००० योगी और बहुत आबादी थी॥

रामनौमी का हर साल मेला लगता है कि जिस में ५ लाख के क़रीब आदमी जमा होते हैं।

नगर स्टेशन से ३ मील है स्टेशन पर सवारी सब भांत की मिलती हैं।

स्टेशन पर वेटिंग रूम और नगर के अन्दर कई धर्मशाला हैं॥

अजण्टा की खोहैं।

रियास्त हैदराबाद में गांव और घाटी है। जी० आई० पी० याना

बम्बई की बड़ी लैन के जलगांव स्टेशन से ३८ मील है इस गांव से ४ मील के फ़ासले पर इस जगह की मशहूर खोहें या पर्ब्बतों को काट कर बने हुए मन्दिर हैं खोहें दिखलाने के लिये एक आदमी उसी जगह मिल सकता है यह खोहें गिनती में २६ हैं पिछले ज़माने में बुद्ध लोगों ने पहाड़ी चट्टान काटकर उन में मन्दिर बनाये थे बाजे मन्दिर इन में से १४०० साल के पुराने हैं। २६ में से २४ विहारे या अस्थल हैं और ५ मन्दिर हैं यह सब बड़े बड़े पील पायों पर खड़े हैं और उन के अन्दर मूर्तिओं पर खूबसूरत रोगन किया हुआ है खोहों में और बाहर पहाड़ पर बहुत से संस्कृत में कुतबे खोदे हुए हैं यह खोहें बड़ी खूबसूरत हैं और देखने के क़ाबिल हैं॥

जलगांव में टट्टु छकड़े और बैल गाड़ियां स्वारी के लिये मिलती हैं॥

जलगांव बम्बई से २६१ मील है तीसरे दर्जे का किराया डाकगाड़ी में ४८) और सवारी गाड़ी में २॥) है

अजमेर।

बम्बई बड़ौदा और सन्टरल इण्डिया रेलवे (बम्बई की छोटी लैन) का स्टेशन और मालवा शाख का जंकशन है। बम्बई से ६१५ मील है तीसरे दरजे का किराया ६।७) और दिल्ली से २३५ मील है किराया २८)है॥

अजमेर बहुत पुराना और मशहूर शहर और ज़िला अजमेर का सदर है कहते हैं इस को राजा अजा ने अंग्रेज़ी सम्बत १४५ में बसाया था इर्द गिर्द की पहाड़ियां चटयल हैं पर बड़ी खूबसूरत हैं और उन में से एक कि जिस को तारागढ़ कहते हैं चोटी घाटी से १००० फ़ाट ऊंची है अजमेर एक पहाड़ी के नीचे के ढलाओ पर

आबाद है और उत्तर और पश्चिम की तर्फ़ पत्थर की दीवार से घिरा हुआ है। शहर के पांच ऊंचे ऊंचे मज़बूत फाटक हैं और शहर के दाव में कई मसजिदें और मन्दिर हैं जिनमें से अधई दीन की झोंपड़ी देखने के लायक़ है। इस के पालपायों और गुम्बज़ की संगतराशी जो अभी तक अच्छी है निहायत खूबसूरत है॥

शहर के पश्चिम की तर्फ़ एक किसी की बनवाई हुई बड़ी सुन्दर झील है जिस को अनासागर कहते हैं यह झील ६०० गज़ लम्बी और १०० गज़ चौड़ी है कई नालों का पानी रोक कर बनाई गई है। बरसात में इस झील का घेरा ६ मील होता है॥

यहां ख्वाजा मुईनउद्दीन चिश्ती का मज़ार है जिस को हिन्दू और मुसलमान दोनों पवित्र मानते हैं इस पर हर साल अगस्त में ६ दिन तक उर्स होता है मुलक के सब हिस्सों से २०,००० लोग आते हैं पास ही तारागढ़ पहाड़ी पर एक मसजिद है जो मुसलमानों की पहली मेमारी का उमदा नमूना है॥

अजमेर से क़रीब ७ मील एक गांव में पुश्कर या पोखर का मेला हर साल होता है यह मेला सारे राजपूताना में बड़ा है बेशुमार घोड़े और टट्टू बीकानेर और इर्द गिर्द के मुल्क से आकर बिकते हैं यात्री भी जो पवित्र तालाब में स्नान करने आते हैं अनगिनत होते हैं। यह मेला नवम्बर में होता है॥

दौलत बाग में झील अनासागर के किनारे पर खूबसूरत बारहदरियां, आम लोगों का सैरगाह का बाग़, रेलवे के दफ़तर, मेओ कालिज जो राजपुताना के राजों के बच्चों की तालीम के लिये बना है देखने के लायक है॥

स्टेशन पर वेटिंग रूम और रिफ्रेशमेन्ट रूम याने आरामगाह और खाने के होटल हैं पास ही डाक बंगला है। सवारी स्टेशन

पर और शहर में मिलती हैं। अमीर हिन्दू साहिबान के लिये जो सरायों में ठहरना पसन्द नहीं करते या डाक बंगले में हिन्दूधर्म होने के सबब से नहीं ठहर सकते घण्टाघर के पास ही स्टेशन के सामने एक हिन्दू होटल है जिस में हर किसम का आराम मिल सक्ता है। स्टेशन के पास एक सराय और शहर में कई धर्मशाला हैं॥

अटूर।

अहाता मद्रास के ज़िला सलेम के ताल्लुक है। इस इलाके में पेरियार पर्बत पर कारीरामन का पगोड़ा बड़ा पवित्र माना जाता है। इस पगोड़े के साल में चार मेले होते है॥

अटूर साऊथ इण्डियन रेलवे की अरकोनाम लैन पर स्टेशन है और मद्रास बीच जंकशन से ४१ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ॥-) आने और सवारी गाड़ी में ॥)। आने लगता है॥

अप्पेकोंडु।

अहाता मद्रास के ज़िला विज़ागापट्टम में समुद्र के किनारे पर एक गांव है। उस जगह शिवजी का मन्दिर है जिस के सबब यह गांव बहुत मशहूर है। उस मन्दिर में पूजा करने से कष्ट दूर होजाते हैं। पहिले यहां बहुत मन्दिर थे पर रेते के नीचे दब गये हैं अप्पेकोंडु विज़ागापट्टम से १३ मील है। विज़ागापट्टम से अप्पेकोंडु को पक्की सड़क जाती है और बैल गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं जिनका आने जाने का किराया २॥) फी गाड़ी है यहां कई धर्मशाला हैं। विज़ागापट्टम मद्रास से ४८७ मील है तीसरे दरजे का किराया ६।<) लगता है॥

अपराजेता देवी या कनकपुर ।

ईस्ट इंडीयन रेलवे (बङ्गाल लैन) की लूप (शाख) लाइन के मुरारई स्टेशन से डेढ़ कोस पश्चिम की तरफ़ हौड़े से १५५ मील के फ़ासले पर एक गांव है रेल का तीसरे दरजे का किराया १॥) आने है। इस मन्दिर में काली माता की पत्थर की मूर्ति है। जो हिन्दू गृहस्थ को छोड़ना चाहता है वह इस तीर्थ में आकर योगाभ्यास करता है। बैशाख पुर्णमाशी को यहां एक मेला होता है जिस में बहुत से महापुरुष आया करते हैं॥

मुरारई में कनकपुर जाने के वास्ते बैल गाड़ी मिलती है कनकपुर में धर्मशाला कोई नहीं॥

अथीराला ।

अहाता मद्रास के जिला कड़ापा में चेयर दरिया पर एक पवित्र स्थान है। मन्दिर के पास ही एक ताल है। कहते हैं कि इस के पानी में स्नान करने से सब पाप नष्ट होजाते हैं जैसा कि परशुराम (जिस को विष्णु का अवतार मानते हैं) के चरित से मालूम होता है। कि वह अपनी माता को मारने के पाप से यहां स्नान करने से पवित्र हुआ। फ़र्वरी की १५ के क़रीब यहां शिवरात्री का मेला तीन दिन तक रहता है हज़ारों यात्री लोग इस में आते हैं मन्दिर के वास्ते हर साल एक हज़ार दो सौ पैंतालीस रुपये जमा होते हैं। इस स्थान से मद्रास रेलवे के स्टेशन नन्दालूर और राजमपेटा पास हैं नन्दालूर यहां से ४ मील और राजमपेटा ६ मील है राजमपेटा में अथीराला जाने के लिये यक्के और बैलगाड़ियां मिलती हैं। ।) आने एक तर्फ़ का किराया लगता है॥

नन्दालूर और राजमपेटा में डाक बंगले हैं और अथीराला में चत्तरम या धर्मशाला हैं॥

नन्द्यालूर मदरास से १३७ मील और राजमपेटा से १३० मील है तीसरे दर्जे का किराया १।≈) आर १।=) लगता है॥

अनूप शहर।

सूबा आगरा और अवध के ज़िला बुलन्दशहर में कसबा है। और अनूप शहर तहसील का सदर है। देहली से ७५ मील उत्तर दक्षिण की तर्फ गंगाजी के पश्चिमी किनारे पर वाक़े हैं। इसकी बुनियाद राजा अनूपराय ने जहांगीर के ज़माने में डाली थी। यात्री लोग गंगाजी के स्नान के लिये वहां जाते है और कार्तिक (नवम्बर दिसम्बर) के महीने में हिन्दूस्तान के सब हिस्सों से पचास हज़ार के करीब लोग गंगाजी के स्नान के वास्ते जमा हो जाते हैं॥

देशी मुसफ़रों के लिये एक बहुत अच्छी सराय बनी हुई है। पर यात्री लोग अकसर प्रोहतों के घरों में ठहरते हैं॥

अनूप शहर अवध रुहेलखण्ड रेलवे के स्टेशन राज घाट से १० मील और ई० आई० आर० के चोला बुलन्द शहर स्टेशन से ३२ मील है राजघाट में बैल गाड़ियां और बुलन्दशहर में यक्के और घोड़े गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं बुलन्दशहर कलकत्ते से ८६६ मील है तीसरे दरजे का किराया ७॥-) है॥

अनन्द पुर।

सूबा पंजाब के ज़िला हुश्यारपुर में एक नगर है। जो सतलुज दरिया के किनारे पर वाक़े है। सब से पास रेलवे स्टेशन सरहिन्द है जहां से रोपड़ तक तांगे जाते हैं और वहां से अनन्दपुर तक बैल गाड़ी या टट्टू जाते हैं जालन्धर से भी अनन्दपुर जा सके हैं।

जालन्धर से ऊना ज़िला हुश्यारपुर तक यका और वहां से अनन्दपुर तक टट्टू आते हैं ॥

सिक्ख मत के बानी गुरु नानक से दसवें गुरु गोविन्दसिंह ने इस नगर को अंगरेज़ी, सम्बत १६७८ में बसाया था। वहां के लोग जो सोढ़ी कहलाते हैं गुरु रामदास की औलाद में से हैं। और निहंग पन्थ का सदर मुक़ाम है होली के दूसरे दिन यहां एक बड़ा भारी मेला होता है जिस को होला कहते हैं बेशुमार लोग ख़ासकर सिक्ख इस मेले में आते हैं॥

दरिया सतलुज के पार के हिस्से में अनन्दपुर बड़े ब्योपार की जगह है॥

इस नगर में दो सरायें और तीन धर्मशाला मुसाफ़िरों के आराम के वास्ते हैं ॥

सरहिन्द दिल्ली से १६५ मील और लाहौर जालन्धर से ८१ मील, तीसरे दरजे का किराया २)॥ और ॥।=)। लगता है ॥

अनवा।

रियासत हैदराबाद दक्खिन में जूआ दरिया पर शेवनी से ५ मील के फ़ासले पर सिलोद तालुक में एक क़सबा है जो जी० आई० पी० रेलवे के जलगांव स्टेशन से २५ मील है। यहां एक छोटा सा ख़ूबसूरत मन्दिर पत्थर का बना हुआ है जिस में बहुत पांखपाये और मूर्त्तियां हैं इस मन्दिर पर हर साल दो मेले चैत और माघ के महीनों में होते हैं जिन में बहुत लोग आते हैं॥

इस क़सबे से रूई खामगाऊं और जलगाऊं को जाती है॥

अनवा में कोई सराय या धर्मशाला नहीं लोग बस्ती में अपना आप बन्दोबस्त कर लेते हैं॥

जलगांव बम्बई से २६१ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ४~) और सवारी गाड़ी में २॥) लगता है ॥

अन्तरावेदी ।

अहाता मदरास के ज़िला गोदावरी में नरसापुर से ६ मील के फ़ासले पर मन्दिर है और गोदावरी दरिया के सात बड़े पवित्र स्थानों में से है । रथयात्रा के मौक़े पर जो माघ शुदि एकादशी को होता है और ५ दिन तक रहता है हज़ारों यात्री इस जगह आते हैं ॥

अन्तरावेदी में कई धर्मशाला हैं मेले के मौक़े पर यात्रियों के आराम के लिये और बन्दोबस्त भी किया जाता है ॥

मदरास रेलवे का निदादावोलू स्टेशन अन्तरावेदी के पास है वहां से किश्ती में बैठ कर यात्री अन्तरावेदी जाते हैं ॥

निदादावोलू मदरास से ३४७ मील है, तीसरे दरजे का किराया ४॥) रु० लगता है ॥

अमलनेर ।

जी० आई० पी० और टापटीवेली रेलवे का जकशन है और पोरी दरिया पर वाक़े है इस जगह से जलगांव के रास्ते भुसावल और सूरत के दरमियान रेल गाड़ियां बराबर चलती हैं ॥

यहां से १२ मील के फ़ासले पर परोला मुक़ाम पर दसहरे के दिनों में एक मेला होता है जिस में दस हज़ार के क़रीब लोग जमा होते हैं। तांगे और बैल गाड़ियां स्टेशन पर मिलसकती हैं । यहां पर रुई दबाने और रुई निकालने की कलें भी हैं और हज़ारों यात्री सूखराम बाबा महाराज के मन्दिर के सालाना मेले पर आते हैं ॥

अमलनेर बम्बई से जलगांव के रास्ते २६६ मील है और

।। विज्ञापन ।।

यह पुस्तक बहुत जल्दी में बनी और छपी है इस लिये इस में कोई ग़लती रहगई हो तो जिस महात्मा को ग़लती मालूम हो वह लायब्रेरीयन रेलवे बोर्ड को लिखें ताकि दूसरी छपाई में उसको दुरुस्त कर दिया जावे ॥

अबदूररशीद,
लायब्रेरीयन रेलवे बोर्ड ।

तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में ३⁄) और डाकगाड़ी में ४॥) लगता है॥

अम्बाटूर।

मदरास रेलवे पर एक स्टेशन और ज़िला चिंगलीपत तहसील सैदापत में एक नगर है। यहां लाल पत्थर की बड़ी बड़ी खाने हैं जिनसे मदरास बन्दर के लिये बहुत पत्थर निकाला गया था स्टेशन से डेढ़ मील के फ़ासले पर थीरूमल्लावायल में मसील.मनी ईश्वर का पुराना और मशहूर मन्दिर है जिस को कहते हैं चोला के राजा ने बनवाया था। मई के महीने में ब्रह्मा ऊशावम के मौक़े पर हज़ारों लोग ख़ासकर मदरासी इस मन्दिर के दर्शन को आते हैं पास ही पचमाले अम्मन का मन्दिर है यह भी बहुत मशहूर है अग्नि पर चलने के तेवहार वाले दिन यहां भी सैकड़ों आदमी आते हैं। थीरूमल्लावायल गांव में यात्रीयों के वास्ते चत्रम हैं तेहवार के दिनों में गाड़ियां सवारी के वास्ते मिलती हैं॥

अम्बटूर मदरास से दस मील और तीसरे दरजे का किराया ⁄)॥। है॥

अम्बाद।

रियासत हैदराबाद दक्खिन के ज़िला औरंगाबाद में बड़ा नगर है और अम्बाद तालुक का सदर मुक़ाम है इस को एक हिन्दू राजा अम्बा ने बसाया था। यह राजा अपने राज्य को छोड़ कर इस नगर के पास एक खोह में आ रहा और उस खोह का नाम अपने नाम पर रक्खा। खोह की जगह अब एक बड़ा खूबसूरत देवी का मन्दिर बन गया है। हर साल इस जगह मेला होता है जिसमें

हज़ारों लोग आते हैं। अनाज और रूई का अम्बाद में व्योपार होता है॥

अम्बाद निज़ाम की रेलवे के जलना स्टेशन से १६ मील है। तांगे और देशी गाड़ियां सवारी के लिये जलना में मिलती हैं।

अम्बाद में धर्मशाला कोई नहीं यात्री लोग मन्दिर में ठहरते हैं।

जलना हैदराबाद से २८१ मील है तीसरे दरजे का किराया २॥।=) लगता है।

अम्बाला।

पंजाब के ज़िला अम्बाला में यह एक बड़ा व्योपार का शहर है और इस के साथ छावनी भी है। यह शहर दिल्ली से १२३ मील और कलकत्ते से १०७७ मील है। चौदवीं सदी ई० में एक राजपूत ने जिस का नाम अम्बा था इस शहर को बसाया था उन दिनों में यह नगर छोटा सा गांव था। १८०८ में सतलुज के वार के राजों ने राजा रणजीत सिंह से बचने के लिये सर्कार अंगरेज़ी से मदद मांगी उस वक़्त के इक़रार नामे के मुआफ़िक़ १८२३ में दयाकौर के मरने पर जो सर्दार गुरबख़्श सिंह की औरत जो अम्बाले की मालिक थी कोई उत्तर अधिकारी न होने के सबब रियासत सर्कार अंगरेज़ी के पास आगई १८४३ में शहर के दक्षिण की तरफ़ छावनी डाली गई और १८४६ में जब पंजाब सर्कार के इलाके में मिलगया तो अम्बाला ज़िले का हेडक्वाटर बनाया गया देशी शहर में नई और पुरानी दो बस्तियां हैं नई बस्ती की सड़कें खुली कुशादा और तरतीब बहुत अच्छी है। अम्बाले में रूई, अनाज, तेल के बीज, अदरक, हलदी, कपड़ा, दरियां, लोहा, ऊन और रेशम का बड़ा व्योपार होता है।

भादों के पिछले दिनों में यहां बावन द्वादशी का मेला होता

है। यह मेला ज़िले में सब से बड़ा और मशहूर है और २० या २५ हज़ार के क़रीब लोग इस मे आते हैं ठाकुरों की सवारी शहर के बीच में नौहरियों के मन्दिर से चलकर शहर के बाहर एक पक्के तालाब पर पहुंचती है और बांस की सुन्दर किश्तियों में जो उस मौक़े के वास्ते बनाई जाती हैं ठाकुरों को बैठाकर पार ले जाते हैं। किश्तियों में खूब रौशनी की जाती है इस मौक़े पर व्योपार भी बहुत होता है ॥

यहां रूई निकालने, रूई दबाने, आटे और शीशे के कारखाने और कलें हैं दरियां अच्छी बनती हैं ॥

स्टेशन के पास देसी मुसाफ़िरों के वास्ते अच्छी पक्की सराय है यक्के शहर में और स्टेशन पर सवारी के लिये मिलते हैं ॥

दिल्ली से अम्बाले शहर तक तीसरे दरजे का किराया १॥=)। है और कलकत्ते से फ़ासला १०३१ मील और तीसरे दरजे का किराया ६॥)॥ है लाहौर से फ़ासला १८२ मील और किराया २=)। है ॥

छावनी शहर से ५ मील है। इसटेशन पर वेटिंगरूम और रिफ़रेशमेंट रूम बने हैं और गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं। छावनी में घोड़दौड़ का मैदान पबलिक बाग़ जहां अंग्रेज़ी बाजा बजा करता है और पेजट पार्क देखने के लायक़ है। स्टेशन के पास एक सराय है ॥

अमबासमुद्राम्।

अहाता मदरास के ज़िली तिन्नीवैली में नगर और अम्बासमुद्राम तालुक़ का हेड कुवाटर है। नगर रेल के स्टेशन से डेढ़ मील है और उसमें जूलाहों की बस्ती ज़ियादा है। स्टेशन से ५ मील

दक्खिन पश्चिम की तरफ़ पपानसम गांव है जिस में शिवजी का एक बड़ा मशहूर मन्दिर और पानी के झरने हैं। जूलाई और दिसम्बर के महीनों में यहां स्नान मेला होता है जिस में बहुत यात्री आते हैं। पास ही बनातीर्थम जगह है यहां भी यात्रा लोग बहुत आते हैं॥

अम्बासमुद्राम में एक रूई कातने की कल है जो पानी से चलती है। धान इस जगह बहुत होते हैं।

स्टेशन पर वेटिंग रूम बना है॥

अम्बासमुद्राम साऊथ इन्डियन रेलवे का स्टेशन है मदरास बीच स्टेशन से ४६८ मील है तीसरे दरजे का किराया ५=) लगता है॥

अमबूर।

मदरास रेलवे पर मदरास से ११३ मील और तीसरे दरजे का किराया १=) है। पालार दरिया स्टेशन से आधे मील के फ़ासले पर बहता है और मेलपति स्टेशन तक जो अम्बूर से ७ मील है लैन के बराबर चला जाता है। दरिया के दक्खनी किनार पर नगेसवारा मन्दिर है और स्टेशन से ३ मील दक्खिन की तरफ़ पर्यानकप्पम गांव के पास समुद्रामा का मशहूर मन्दिर है, हज़ारों यात्री इन मन्दिरों के दर्शन को हर साल आते हैं शुक्र के दिन शैंडीयान मेला होता है। इस कसबे में चमड़ा रंगने के कई अच्छे कारख़ाने हैं॥

अम्बूर स्टेशन पर यक्के और बैल गाड़ियां सवारी के लिये मिलती है। यहां धर्मशाला या सराय कोई नहीं पर गांव के लोग मेले में आने वालों को अपने घरों में रख लेते हैं॥

अमबर नाथ।

बम्बई आहाते के ज़िला कलयान में गांव है और जी० आई० पी० रेलवे का स्टेशन है। यह गांव बम्बई से ३८ मील पूना रायचूर लैन पर है और तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ॥०) है॥

स्टेशन से क़रीब एक मील के फ़ासले पर शिवजी का एक बहुत पुराना और सुन्दर मन्दिर है जिस को कहते है कि पांडवों ने बनाया था। शिवरात्री के मौके पर इस मन्दिर पर मेला होता है जिस में अनागिन्त लोग आते हैं। स्टेशन पर बैल गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं। इस गांव में सराय या धर्मशाला नहीं॥

अमर कंटक पर्ब्बत या रतनपुर।

हौड़े से इस्ट-इन्डियन रेलवे में असनसोल स्टेशन वहां से बङ्गाल नागपुर रेलवे से बिलासपुर स्टेशन फिर वहां से कटनी ब्रांच के पेंडरारोड स्टेशन तक रेल में जाते हैं इस स्टेश से उत्तर कर पूर्ब को तरफ साढ़े तीन कोस पैदल जाना पड़ता है। हौड़े से पैंडरा रोड स्टेशन ४०८ मील है और तीसरे दरजे का किराया ५।≈)॥। है। यहां पर पांच कुण्ड हैं और इसी जगह से नर्बदा दरिया निकलता है इस जगह पर बहुत से मन्दिर हैं जो महाभारत के जमाने के बने हुये हैं। और इसी जगह पर भगवान जी पृथिवी पर आये थे। अमर कंटक से नर्बदा सागर संगम (यानी जहां नर्बदा और दरिया से मिल जाता है) दस बड़े बड़े मशहूर तीर्थ हैं जिन का वर्णन आगे आवेगा। हिन्दूओं के मशहूर कवि कालीदास ने अपनी किताब मेघदूत यहां पर बनवाई थी। यह जगह ३४९३ फुट समुद्र से ऊंची है॥

अमरनाथ (कश्मीर)

कलकत्ते से रावलपिन्डी स्टेशन तक रेल में जाते हैं। वहां से कश्मीर की राजधानी श्रीनगर को तांगे या यक्के पर और श्रीनगर से अमरनाथ को जो आठ पड़ाव है पैदल जाते हैं। कलकत्ते से तीसरे दरजे का किराया रावलपिंडी तक १४~) आना है और फ़ासला १३६३ मील है। सलोनों के तेहवार के दिन इस तीर्थ पर बहुत से महात्मा और यात्री लोग दूर दूर से आते हैं। श्रीनगर के पास रामपान जगह में एक झंडा खड़ा कर देते हैं जिससे यह मालूम होता है कि यात्री लोगों के वास्ते वर्फ़ से रास्ता खुल गया। पूर्णमाशी से एक हफ्ता पहले श्रीनगर में सब यात्री इकट्ठे होते हैं और वहां से अमरनाथ को रवाना होते हैं। रास्ते में खाने की बस्तु साथ ले जानी पड़ती हैं। रास्ते में सब पड़ाओं में तीर्थ हैं। पूर्णमाशी के दिन अमरनाथ पहुंच जाते हैं। इस जगह को हिन्दू लोग शिव जी का स्थान मानते हैं और अगर यात्रियों की बिन्ती की आवाज़ सुनकर कबूतर जो बहुत इस जगह में रहते हैं अपने घरों से उड़ जायें तो समझा जाता है कि यात्रियों की प्रार्थना सिद्ध होगई। यहां छत्त से पानी गिर गिर कर एक खम्बे की शकल बन जाता है इस को लोग शिवजी की मूर्त्ति ख़ियाल करते हैं और कहते हैं कि यह चन्द्रमा के साथ घटती बढ़ती रहती है॥

रावलपिंडी से श्रीनगर को कोहमरी के रास्ते जाना अच्छा है रावलपिंडी में तांगे और यक्के मिलते हैं तांगे का किराया रावलपिंडी से मरी तक ८) रुपये और मरी से श्रीनगर तक ३७) रुपये फी सवारी है। यक्के का किराया रावलपिंडी से श्रीनगर तक २२) रुपये लगता है पर यक्के का किराया घटता बढ़ता रहता है श्रीनगर में एक सराय और कई धर्म्मशाला हैं॥

अमरापुरा (अर्थात् देवताओं का नगर)।

बर्मा में ईरावदी नदी के किनारे पर एक नगर है। बर्मा की राजधानी बनाने के लिये १७८३ ई० में बसाया गया था पर १८१० ई० में आग से तबाह हो गया था और फिर बाद में भौंचाल से बहुत नुक़सान हुआ। यह नगर अच्छा बना हुआ है पर मन्दिरों के सिवा सब मकान बांस के हैं। कई पर सुनैहरी काम किया हुआ है और इस लिये भले मालूम होते हैं।

सबसे बढ़िया एक मशहूर मन्दिर है जिसके अन्दर २५० सुनहरी बांस के बड़े २ पील पाये हैं इस मन्दिर में बुद्धकी कांसीकी बड़ी भारी मूर्ती है। राजों के महिल के खंडर शहर के बीच में अभी तक हैं॥

अगस्त के महीने में यदानाकूपवे मेला दो भाईयों की यादगारी में होताहै जो एक मन्दिर की बुनियाद का पत्थर न रख सकने के सबब यहां मारे गये थे उन दिनों में इस जगह एक स्टेशन बना दिया जाता है॥

अमरापुरा मूवैली रेलवे पर मांडले से ६ मील और रंगून से ३३८ मील है। तीसरे दरजे का किराया मांडले से ~)॥ और रंगून से ५)॥ है॥

देशी लोगों के लिये यहां कई धर्म्मशाला हैं॥

अमृतसर।

आबादी और बड़ाई में यह नगर पंजाब में दूसरे दरजे पर है रिया व्यास और रावी के बीच में लाहौर से ३३ मील और दिल्ली से ३१७ मील के फ़ासले पर वाक़े है और नार्थवैस्टरेन रेलवे की शाख पठानकोट का जंकशन है। लाहौर से तीसरे दरजे का किराया ।=) और दिल्ली से ३।=) है॥

अमृतसर गुरू रामदास ने १५७४ में बसाया था यहां सबसे बढ़कर देखने के लायक दरबार साहिब है यह छोटा पर खूबसूरत सुनैहरी मन्दिर शहर के अन्दर एक तालाब के बीच में संगमरमर के चबूतरे पर बना हुआ है। मन्दिर भी संगमरमर का है और गुम्बज़ सुनैहरी है अन्दर बाहर खूबसूरत बेलबूटे बने हैं सिक्ख लोग दरबार साहिब को बहुत पवित्र मानते हैं और उसकी सजावटके लिये रुपया देना पुण्य का काम जानते हैं। मन्दिर के अन्दर बड़े आदर के साथ ग्रंथ साहिब रक्खा हुआ है पासही एक तालाब के किनारे पर बाबाटल्ल है। उसकी मीनारों पर से दरबार साहिब का बड़ा अच्छा नज़ारा दिखाई देता है तालाब के एक किनारे पर घंटा घर है। इन के सिवाय हाल बाज़ार टाऊनहाल, गवर्नमेंन्ट स्कूल, सन्तोकसर तालाब जो शहर के अन्दर है। कम्पनी बाग़ और शहर के बाहिर रामबाग और खालसा कालिज देखने के मुक़ाम हैं कम्पनी बाग में मलका वि टोरिया का संगमरमर का पूरा बुत है॥

यह शहर पंजाब में व्योपार की बड़ी मण्डी है दोशाले और गलीचे इस शहर के बहुत मशहूर हैं ऊनी और रेशमी कपड़े और ज़रदोज़ी के बड़े २ कारखाने हैं। हरसाल अप्रैल और नवम्बर के महीनों में बैसाखी और दीवाली के दो मेले होते हैं इन मेलों पर अनगिनत आदमी आते हैं माल मन्डी भी लगती है॥

स्टेशन पर मुसाफ़िरखाने और शहर में बहुत धर्म्मशाला और सरायें हैं जिन में से एक दो के सिवा सब बिना किराये की हैं स्टेशन के पास संतराम का तालाब है जहां हिन्दू लोग बिना किराये ठहर सकते हैं और हाल बाज़ार में घुस्ते ही मुहम्मद शाह की सरायं जहां सब लोग ठहर सकते हैं स्टेशने पर सवारी हर वक़्त मिलती है॥

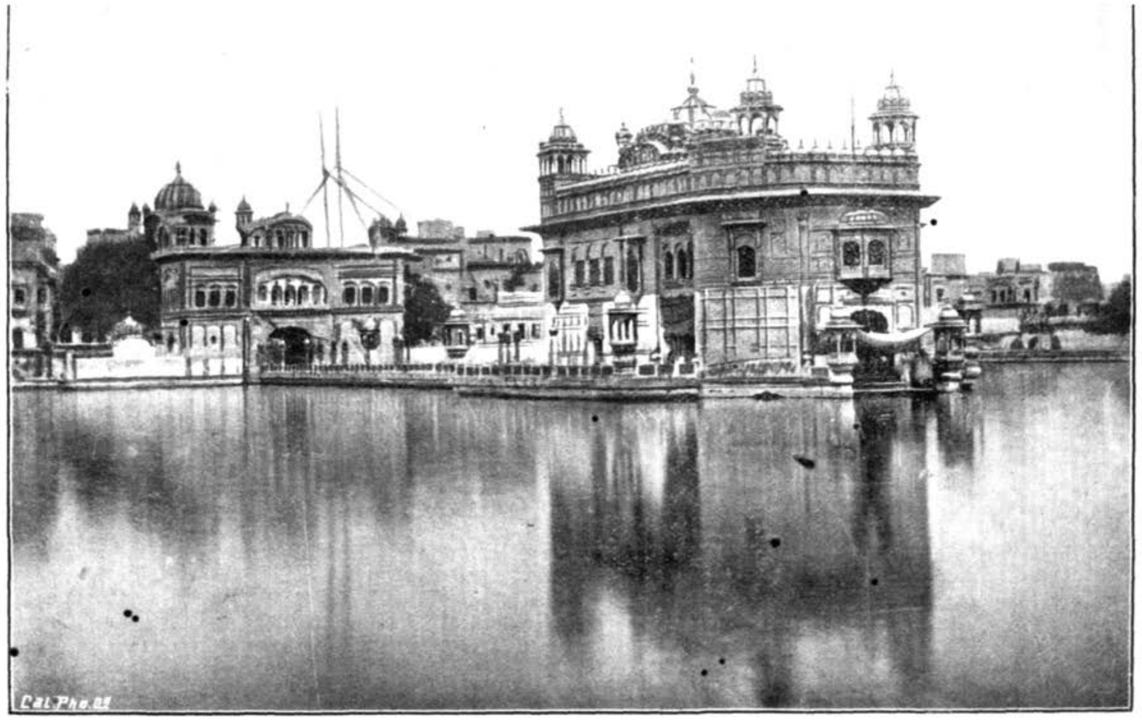


Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

दरबार साहब—अमिरतसर।

अमरावती ।

बरार में ज़िला अमरावती का हेडकुआटर है और जी० आई० पी० रेलवे पर बम्बई से ४११ मील के फ़ासले पर वाक़े है। बम्बई से तीसरे दरजे का किराया ४।=)॥ है। इस जगह सब से अजीब देसी मकान भवानी का मन्दिर है जिस को अम्बा माई का मन्दिर भी कहते हैं। कहते हैं कि यह मन्दिर हज़ार वर्ष का बना हुआ है इस के पास और मन्दिर हैं जो सौ साल के बने हुए हैं॥

अमरावती रूई के व्योपार के सबब बहुत मशहूर है और बरार में बड़ा धनवान नगर है। यहां कई रूई की कलें हैं। १८०४ ई० में जनरल बिलज़ली साहिब गाविलगढ़ सर करने के बाद यहां आकर ठहरे थे॥

देसी और यूरूपीयन मुसाफ़िरों के लिये टिकने की जगहें बनी हुई हैं॥

अमरेश्वर ।

नर्बदा नदी के किनारे पर एक मन्दिर है जिस में महादेव जी की मूर्ति है। यह मन्दिर महाभारत के ज़माने का बना हुआ है राजपूताना मालवा रेलवे के मूर्तका स्टेशन से साढ़े तीन कोस है मूर्तका अजमेर से ३५६ मील है और तीसरे दरजे का किराया ३॥=) है॥

हिन्दू लोग अमरेश्वर को बहुत पवित्र मानते हैं और यात्री लोग साल भर यहां आते रहते हैं कार्तिक पूर्णमाशी को एक बड़ा भारी मेला होता है जिस में दस हज़ार के क़रीब यात्री आते हैं॥

स्टेशन पर बैल गाड़ियां सवारी के वास्ते मिलती हैं॥

अमरेश्वर में एक धर्मशाला भी है पर लोग उस में कम ठहरते हैं॥

विषयसूची

अरुन्याचल ।

मदरास अहाते में साऊथ इण्डियन रेलवे की विलापुरम घण्टाकल लैन पर स्टेशन है आजकल इस को तीरुवन्नामलई कहते हैं पांडिचरी से तीसरे दरजे का किराया ॥ॐ) लगता है स्टेशन से आधा मील पशचिम की तर्फ अरुन्याचल पवित्र जगह है इस जगह का मन्दिर एक पहाड़ी पर बना हुआ है उस में महादेव की पांच सिर की मूर्ति है। पारवती और ब्रह्म को भी मूर्ति है ॥

अरुन्याचल में कई धर्म्मशाला हैं यके और बैलगाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं ॥

यह स्टेशन कटपदी जंकशन से ५८ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥ॐ) लगता है ॥

अरकोनाम ।

मदरास रेलवे और साऊथ इण्डियन रेलवे का जंकशन है। कांजीवर्म में जो साऊथ इण्डियन रेलवे के रास्ते यहां से १७ मील है दक्खिनी हिन्दूस्तान के कई बहुत मशहूर और पवित्र मन्दिर हैं। मई के महीने में श्रीदेवाराजा स्वामी के मन्दिर का बड़ा भारी मेला होता है जो दस दिन तक रहता है। यात्री लोग देश के सब हिस्से से आते हैं। मदरास रेलवे के तार इंजनीयर। डिस्टरिक्ट इंजनीयर और टरैफिक मैनेजर अरकोनाम में रहते हैं। सबमैजिस्टरेट और सबरजिस्टरार की कचहरियां और एक अस्पताल भी यहां है ॥

स्टेशन के पास ही देसियों के आराम के लिये कई चतरम या धर्म्मशालायें और होटल हैं स्टेशन पर भी देसियों के लिये खाना मिलता है। अरकोनाम मदरास से ४३ मील है और तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में ॥) है और डाक गाड़ी में ॥-) है ॥

अरन्तंगी ।

साऊथ इण्डियन रेलवे का स्टेशन है गांव स्टेशन से आधे मील के करीब है। डिप्टी तहसीलदार और सब मजिस्ट्रेट का हैड क्वाटर है, गांव में एक चत्तरम भी है अरन्तंगी में हर मंगल को मेला होता है। कपड़ा यहां से बाहर जाता है, स्टेशन से एक मील के करीब वीराम हालियाम्मनकोइल का मन्दिर है जहां मई के महीने में एक तेहवार होता है। अथूमनाथ स्वामी का मन्दिर जिस को अवदयाकोइल कहते हैं। अरन्तंगी से ७मील दक्खिन पूर्व की तर्फ है यात्री रामेश्वर को इस रास्ते से जाते हैं, जून और दिसम्बर के महीनों में यहां अनितीरुमें जन्म और अरुद्र दर्शनम के मेले होते हैं, बहुत लोग इन मेलों में आते हैं मन्दिर बड़ा सुन्दर बना हुआ है और देखने के लायक है॥

अरन्तंगी मद्रास बीच स्टेशन से २७६ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ३॥=) और सवारी गाड़ी में ३=) लगता है॥

अरोड़ ।

सिंध के जिला शिकारपुर में रोहड़ी से पांच मील एक उजड़ा हुआ नगर है। किसी ज़माने में सिंध के हिन्दू राजों की राजधानी थी। इस के पास कालकादेवी की खोह है जिस को हिन्दू लोग बड़ा पवित्र मानते हैं। यहां हर साल सितम्बर के महीनेमें मेला होता है। जिस में ६ हज़ार के करीब लोग ज़िला सक्खर से आते हैं। यहां एक मुसाफिरखाना टिकने के लिये है॥

रोहड़ी लाहौर से ४८८ मील और तीसरे दरजे का किराया ५।≈)॥ है और करांची से २६६ मील है और तीसरे दरजे का किराया ३।≈)॥ है॥

अरवी ।

यह कसबा वरधा सूबाजात मुतवस्सत में वरधा शहर से करीब ३४ मील के फासले पर उत्तर पश्चिमकी तर्फ वाके है। कहते हैं ३०० वर्ष गुजरे हैं तिलंगराओ वली ने यह शहर बसाया था इस लिये कुछ लोग अरवी को तिलंगराओ वली भी कहते हैं हिन्दूओं के ख़ियाल में तिलंगराओ हिन्दू था और मुसलमान उसे मुसलमान मानते हैं दोनों उसको मानते हैं और उसकी कबर पर जाते है। अरवी ब्योपार की बड़ी मण्डी है। यहां एक सरांय भी है ॥

यह स्टेशन सदर्न मरहट्टा रेलवे पर पूना से ६७ मील है और तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में १।)॥ और सवारी गाड़ी में १।) है ॥

अलावा खावा ।

अर्थात सूखे चावल खाना। यह बलिया गांव जिला दीनाजपुर सूबा बङ्गाल में एक मसहूर मेला हर साल अक्तूबर या नवम्बर के महीने में रासपुरनीमा तेहवार के मौके पर कृष्ण जी का यादगारी में होता है। यात्री लोग सूखे चावल कृष्ण जी को चढ़ाते हैं इसी वास्ते इस का नाम अलावा खावा हो गया है। यह मेला ८ दिन से १५ दिन तक रहता है और ७५००० या ८०००० के करीब लोग इस में आते हैं। मेले के दिनों में बड़ा ब्योपार होता है ॥

यह गांव ईस्टर्न बङ्गाल रेलवे के हलदीबाड़ी स्टेशन से ३६ मील है स्टेशन पर बलिया जाने के लिये बैल गाड़ियां मिलती हैं। बलिया में कोई सराय या धर्मशाला नहीं यात्री लोग टिकने के वास्ते आप बन्दोबस्त करते हैं ॥

हलदीबाड़ी से स्टेशन कलकत्ते से २६२ मील है तीसरे दर्जे का किराया ३॥)॥ लगता है ॥

अलीगढ़ ।

कलकत्ते से अलीगढ़ ८२५ मील और दिल्ली से ८४ मील है और सूबा आगरा और अवध में कमिश्नरी, मेरठ के ज़िला अलीगढ़ का हेडक्वाटर है। सिवल स्टेशन और क़िला पुराने मशहूर कोयल शहर के गिर्द नवाह में वाक़े है। कहते हैं कि कोयल शहर को सूर्य बंशी ख़ानदान के एक क्षत्री ने बसाया था। पुराने ज़माने में कोयल डोर राजपूत राजों का गढ़ था और इस वक़्त जो शहर अलीगढ़ है यहां उस की बिरादरी के लोग आबाद थे। अब भी उन का क़िला शहर के बीच में मौजूद है बारहवीं सदी ईस्वी के आख़ीर हिस्से में इस ज़िले पर मुसलमानों ने हमला किया और फिर मुग़ल ख़ानदान के बादशाहों तैमूर और बाबर ने औरंगज़ेब के मरने के बाद मरहट्टों, जाटों, पठानों और रुहेलों में कोयल के वास्ते आपस में लड़ाई लग गई क्योंकि यह शहर आगरा, मथुरा, दिल्ली और रोहेलखंड की सड़कों के सिरे पर वाक़े था इस वास्ते जंगी ख़ियाल से बड़ा ज़रूरी समझा जाता था, १७८४ से १८०३ तक जब यह शहर मरहट्टों के कबज़े में था तो उन्होंने क़िले को बहुत मज़बूत बना दिया और महाराजा सिन्धिया ने अपनी फ़ौज को यूरुपी क़वायद सिखाने के लिये इस को पसंद किया। १८०३ में अंगरेजी जरनैल लार्डलक ने इस क़िले पर चढ़ाई की और बड़ी भारी और लम्बी लड़ाई के बाद इसको फ़तह किया और इस सबब से सारे उत्तर के दोआबे का सिवालक पर्वत तक अंगरेज़ों के हाथ में कुञ्जी आगई ॥

अलीगढ़ में एक बड़ा भारी कालिज है जिस को सर सय्यद अहमदख़ां ने बनाया था, यह कालिज सारे हिन्दुस्तान में अच्छा माना जाता है और यहां की पढ़ाई बहुत अच्छी है ॥

अलीगढ़ में सरायें और होटल हैं और स्टेशन पर भी वेटिंग रूम और रिफ़रेशमेन्ट रूम हैं स्टेशन के पास ही लाला अजुध्या प्रसाद की बनाई हुई धर्म्मशाला है जिस में २० के क़रीब आदमी ठहर सक्ते हैं। इसके पास दुकानें हैं यहां से खाने की चीज़ें मिलती हैं। स्वारी स्टेशन पर और शहर में हर वक़्त मिलती है ॥

अलीगढ़ ई० आई और अवध रोहेलखंड रेलवे का जंकशन है, कलकत्ते से तीसरे दरजे का किराया ७।=)॥ है ॥

अलाहाबाद या प्रयाग।

यह बड़ा सिवल और मिलिटेरी शहर सूबा आगरा और अवध के लाटसाहिब का सदर मुक़ाम है। और गंगाजी और जमना जी के संगम पर बम्बई से जी० आई० पी० और ईस्टइंडियन रेलवे के रस्ते ८४४ मील और कलकत्ते से ५१४ मील पर वाक़े है। तीसरे दरजे का किराया बम्बई से मुसाफ़िर गाड़ी में ९) और डाक गाड़ी में १३॥=) है और कलकत्ते से ५=) है।

शहर और छावनी से थोड़े फ़ासले पर गंगाजी और जमना जी के संगम पर क़िला है जिस को अकबर ने सन् १५७५ में बनाया था इस क़िले के अन्दर एक पत्थर का पीलपाया ३० फुट ऊंचा है जिस को राजा अशोक ने अंग्रेज़ी सन् २४० साल पहिले बनवाया था। इस पर राजा अशोक के क़ानून और उस ज़माने की तारीख़ खुदी हुई है ॥

शहर अलाहाबाद को हिन्दू लोग बड़ी पवित्र जगह मानते हैं। क्योंकि यहां सब से पवित्र तीन दरियाओं गंगा, जमना और

सरस्वती जी का संगम है। सूबा आगरा और अवध का सब से बड़ा मेला जो माघ मेला कहलाता है अलाहाबाद में दिसम्बर और जनवरी के महीनों में किले के नज़दीक एक मैदान में गंगा और जमुना के संगम के करीब होता है। ढाई लाख के करीब यात्री इस मेले में आते हैं लेकिन कुम्भ का मेला जो हर बारहवें साल होता है इस से भी बड़ा है इस में १०,००,००० यात्री जमा हो जाते हैं ॥

ऐलफ़रेड पार्क जो सन् १८७० में डियूक आफ़ ऐडिनबरा के हिन्दुस्तान आने की यादगारी में बनाई गई थी बहुत खूबसूरत है। मकफ़र्सनपार्क छावनी में और रेलवे स्टेशन के पास खुसरो बाग़ जिस में तीन मक़बरे हैं देखने के लायक़ हैं ॥

अलाहाबाद में कई उमदा होटल और सराय हैं स्टेशन पर भी आराम कमरे हैं सवारी हर वक़्त मिलती है। स्टेशन के बाहर ही लाला बिहारीलाल मुअलाज की धर्मशाला है जहां सब चीज़ मिल सकती हैं ॥

इस शहर की सन् १८५७ ई० के ग़दर में एक देसी पलटन बिगड़गई थी इसलिये इस के नाम पर बग़ावत का बट्टा है ॥

अलन्दी ।

बम्बई अहाते के ज़िला पूना में क़सबा और सदर्न मरहट्टा रेलवे का स्टेशन है। हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है ॥

अलंदी पूना से १५ मील है और सवारी गाड़ी से तीसरे दरजे का किराया ढाई आने और डाकगाड़ी से सवा तीन आने है। स्टेशन के पास देसी मुसाफ़िरों के वास्ते एक धर्मशाला है ॥

अवानी ।

मैसर रियासत के ज़िला कोलर और मुलबागुल तालुक़ में एक गाऊं है। हिन्दू लोग इस को अवन्तिका क्षेत्रा याने हिन्दुस्तान की दस बड़ी पवित्र जगहों में मानते हैं। पहले यह दक्खिन का गया कहलाता था। यहां रामचन्द्र जी और भरत के और और बहुत से मन्दिर हैं। कहते हैं कि जब रामचन्द्र जी सीता जी को लंका से लाये तो यहां आकर ठहरे थे और फिर जब रामचन्द्र जी ने सीता जी को पीछे त्याग दिया तो वह इसी जगह आकर रही थी और उन के जोड़े लड़कों ने इसी जगह जन्म लिया था। वाल्मीकी जो बड़ा मशहूर कवि हुआ है और जिस ने रामायण लिखी थी सीता जी और उनके लड़कों की ख़बरदारी किया करता था। बाल्मीकी के सबब गांव के पास की पहाड़ी बाल्मीकी पर्ब्बत कहलाती है। सामर्थ पन्थ के गुरू यहां रहते हैं॥

फागुण महीने में शिवरात्री को यहां हर साल बड़ा भारी मेला होता है जो दस दिन तक रहता है। दस हज़ार के क़रीब लोग मले में आते हैं॥

बेमंगला वाटरवर्क्स यहां से ७ मील है। अवानी मदरास रैलवे की बंगलोर लैन पर स्टेशन है और बौरंगपेट स्टेशन से २२ मील है। बौरंगपेट में यक्के, बहलियां और घोड़ा गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं॥

अवानी में देशी लोगों के आराम के लिये एक चत्रम है। अंग्रेज़ लोग मुलबागुल के डाक बङ्गले में ठहर सक्ते हैं॥

बौरंगपेट मदरास से १७६ मील है। तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में २।-) और मुसाफिर गाड़ी में १॥।-) लगता है॥

अहोबालम ।

अहाता मद्रास के ज़िला कर्नूल में गांव है। इस के पास ही पहाड़ी पर तीन पगोडे एक पहाड़ी के नीचे दूसरा आधे रास्ते पर और तीसरा पहाड़ी की चोटी पर बन हुये हैं जो उस इलाके में बहुत मशहूर हैं और पवित्र माने जाते हैं इन में से एक निहायत खूबसूरत है उस की दीवारों पर और दोनों ड्योढ़ियों पर जो उन के सामने ८ फीट गोल पीलपायों पर खड़ी हैं रामायण के वाक़िआत की तस्वीरें बड़ी खूबी की बनी हैं॥

फालगुन के महीने में होली पूर्णमाशी को यहां चार दिन तक मेला होता है जिस में सैकड़ों लोग आते हैं॥

यहां कोई धर्मशाला नहीं पर एक मन्तापम है जिस में हिन्दू ठहर सक्ते हैं॥

अहोबालम सदर्न महर्द्दा रेलवे के नन्दियाल स्टेशन से ३० मील है। बैल गाड़ियां सवारी के लिये नन्दियाल में मिलती हैं॥

नन्दियाल मैसूर से ३५० मील और बेजवादा से १८६ मील है। तीसरे दर्जे का किराया ३॥=)॥ और १॥≈)॥ लगता है॥

अलवर ।

दिल्ली से ९८ मील के फासले पर एक राजपूत रियासत है जिस पर कछवाहा नरुका राजे राज करते हैं इस को राओ राजा पर्ताप सिंह ने बसाया था॥

राजधानी स्टेशन से २ मील है और उसके पास एक खूबसूरत क़िला है जो १२०० फीट ऊंचा है इस क़िले के गिर्द बाग़ और बड़े बड़े दरख़्त हैं जिन के सबब नगर और भी भला मालूम होता है। यहां देखने वाले मकान यह हैं॥

क़रीब ५० मील है और समुन्द्र से ऊंचाई ४५०० फ़ीट है लेकिन सब से ऊंची चोटी जिसको गुरु सिकरा कहते हैं ५६०० फ़ीट से भी ज़ियादा ऊंची है ॥

आबू बड़ी मशहूर तीर्थ की जगह है खास कर जैनियों को जिन की देवलवाड़ा में निहायत खूबसूरत पूजा की जगह है। देवल-वाड़ा पहाड़ के बीच में गुरुसिकरा से पांच मील दक्खिनी पश्चमी कोने में वाक़े है उस झुंड में ५ मन्दिर है जिन में से सब से बड़ा तीन मंज़िल का मन्दिर ऋषभनाथ या ऋषभदेव के नाम पर है ऋषभदेव २४ तीर्थंकरों में से जिन को जैन लोग पूजते हैं पहिला तीर्थंकर था। करनल टाड साहिब लिखते हैं कि बिलाशक यह मन्दिर हिन्दुस्तान में सबसे खूबसूरत है और ताज महिल के सिवा इस देश में और कोई इमारत नहीं जो इस को पहुंच सके। जहां यह मन्दिर बना है वहां शिवजी और विष्णु के मान्दिर थे कहते हैं कि अनहिल वाड़े के एक सौदागर बनूलशाह ने जिसने यह मन्दिर बनाया, यह जगह सिरहोई के राजा से खरीदी थी। जितनी ज़मीन दरकार थी उस में रुपये बिछाकर क़ीमत दी थी। यह मन्दिर १४ साल में बना था और ५६ लाख के सिवा जो ज़मीन के ठीक करनेमें खर्च हुआ १८ क्रोड़ रुपया इस पर लागत आई थी मन्दिर के सामने बनाने वाले का बुत खड़ा है इस में उस को घोड़े पर सवार दिखाया है, दूसरा मन्दिर जो नेमीनाथ के नाम पर है एक कुतबे से मालूम होता है कि तेरवीं सदी में बना था, बाक़ी मन्दिर ऐसे खूबसूरत नहीं और सिर्फ़ ४०० वर्ष के पुराने हैं। इन मन्दिरों के पास एक छोटी सी खूबसूरत झीलहै जिस को नुकी तलाव कहते हैं ॥

आबू की आब हवा तन्दुरुस्ती के लिये बहुत अच्छी है क्योंकि सालभर की रोज़ाना गर्मी की औसत सिर्फ़ ५६ दर्जे होती है। मेंह की पिछले कई साल की औसत ६० इंच है ॥

स्टेशन पर वेटिंग रूम और रिफ्रेश्मेण्ट रूम यानी मुसाफ़िर खाना और होटल हैं और स्टेशन के पास और पहाड़ों के ऊपर डाक बंगले और सरायें और धर्मशाला हैं ॥

आबू रोड़ बम्बई से ४२५ मील और तीसरे दर्जे का किराया ४॥-) है और दिल्लीसे छोटी लैनमें ४२४ मील और ३॥-) किराया है ॥

अर्थापद या हरीपद ।

मदरास अहाते की टावनकोर रियासत में एक मशहूर और बड़ा पवित्र और खूबसूरत मन्दिर है रियासत की तर्फ़ से इस मन्दिर के लिये बहुत रुपया मिलता है । अप्रैल के महिने में इस जगह मेला भी होता है । इस मन्दिर के हर साल तीन मेले वलायुद्ध स्वामी की यादगारि में होते हैं । पहला अगस्त सितंबर में । दूसरा दिसम्बर जनवरी में और तीसरा अप्रैल मई में होते हैं यहां चावल, मसाला और कपड़े का व्योपार होता है । इस जगह धर्मशाला कोई नहीं कुईलन स्टेशन इस जगह से ३६ मील है पर वहां सवारी कोई नहीं मिलती कुईलन साऊथ इण्डियन रेलवे पर मदरास बीच स्टेशन से ५५५ मील है । तीसरे दर्जे का किराया ६-) है ॥

आरसो केथर ।

सदरन मरहट्टा रेलवे पर स्टेशन है । कसबे के बाहर उत्तर की तर्फ़ कई टूटे हुये मन्दिर हैं जिन में से एक खास चलूक्यां की मेमारी का नमूना है ॥

कसबे के पास एक पहाड़ी पर विष्णु का मन्दिर है जिस को जाने के लिये कई सौ पत्थर की सीढियां बनी हुई हैं । दसहरे के मौक़े पर बहुत यात्री इस मंदिर के दर्शन को आते हैं ॥

मसूर हर्नहल्ली सोने की कानें यहां से ७ मील हैं आरसीकेयर सदर्न मरहट्टा रेलवे पर पूना से ५२३ मील हैं तीसरे दरजे का किराया ६॥।-) है। स्टेशन पर खाने के कमरे और शहर में कई चत्तरम और अंग्रेज़ों और देसियों के लिये डाक बंगले हैं ॥

आलवे ।

मद्रास रेलवे की शोरानूर कोचीन शाख का स्टेशन है मद्रास से ४१५ मील और शोरानूर से ५५ मील है मुसाफ़िर गाड़ी से तीसरे दरजे का किराया मद्रास से ४॥) रु० और शोरानूर से ॥।) आने हैं ॥

आलवे कोचीन में ठंडी जगह है। अप्रैल और मई के गर्म महीनों में अंग्रेज़ और देसी लोग वहां जाकर रहते हैं ट्रावनकोर के महाराजा साहिब और रेज़िडैण्ट साहिब की कोठियां बनी हुई हैं कोचीन के राजा साहिब का महिल चेवाड़ा में आलवे से ढाई मील है। मार्च के महीने में दरया के किनारे एक मन्दिर का बड़ा मेला होता है जिस में मालाबार के हिन्दू बहुत आते हैं ॥

यहां कोई धर्मशाला नहीं लोग मन्दिर के पास ठहरते हैं ॥

आदि नाथ ।

आसाम के ज़िला चिट्टागांग सब डवीज़न कार्क्सज़ बाज़ार, थाना मैसखाल में टापू है और पानी के रास्ते चिट्टागांग नगर से ७५ मील है यहां रिटरीवर फलोटीला कम्पनी के जहाज़ ठहरते हैं ॥

इस टापू में एक छोटी सी पहाड़ी के ऊपर एक मन्दिर है जिस में आदिनाथ महादेव जी की मूर्ती है यात्री लोग सीता कुंड तीर्थ से जो इसी ज़िले में है लौटते हुये इस मन्दिर के दर्शन करते हैं। मेलों का हाल सीता कुण्ड के हाल में दिया गया है ॥

बर्म्मा के लोगों के टिकने के लिये घर बने हुए हैं पर और लोगों को अपना बन्दोबस्त बज़ार में करना पड़ता है॥

चिटागांग से कलकत्ते तक रेल में तीसरे दरजे का किराया ४।।।=) लगता है।

आहार।

सूबा आगरा और अवध के ज़िला बुलन्द शहर में एक पुराना कसबा है और बुलन्द शहर से २१ मील उत्तर पूर्व की तरफ गंगा जी के दाहिने किनारे पर वाके है यहां जून के महीने में एक बड़ा मेला होता है जिस में अनगिनत लोग गंगा जी के स्नान करने के लिये आते हैं। इस कसबे में बहुत से मन्दिर हैं लेकिन इन में से न तो कोई बहुत पुराना है और न कोई बहुत खूबसूरत है। बुलन्दशहर में सवारी के लिये यक्के मिलते हैं। बुलन्दशहर कलकत्ते से ८६६ मील है और तीसरे दरजे का किराया ७।।-) है। आहार में एक कच्ची सराय है॥

अहियारी।

अहाता बङ्गाल के ज़िला दरभंगा में एक गांव है। यहां पर आहलया स्थान में रामनौमी का मेला होता है जिस में १० हज़ार के करीब यात्री लोग जमा होते हैं इस गांव में ५ खूबसूरत मन्दिर हैं जिन में रामचन्द्र जी और सीता जी की मूर्तियां रक्खी हैं॥

यहां कोई सराय या धमशाला नहीं है लोग गांव में टिकने का बन्दोबस्त कर लेते हैं और अंग्रेज़ लोग कमतौवल के डाक बंगले में जो यहां से एक मील है ठहर सक्ते हैं॥

दरभंगा से कमतौवल तक तीसरे दरजे का किराया =)।। है॥

इगतपुरी ।

स्टेशन पर वेटिंग रूम और रिफरेशमैण्ट रूम याने मुसाफिर खाने और खाने के कमरे हैं और स्टेशन से थोड़ी दूर पर एक डाक बंगला है और नगर में तीन धर्मशालायें हैं यह स्टेशन थल घाट पर है और अंग्रेज़ लोग यहां की आबहवा बहुत पसन्द करते हैं। रेलवे कम्पनी के इञ्जन बनाने के कारखाने इसी जगह हैं जिस में बहुत अंग्रेज़ और देसी नौकर हैं एक सुन्दर झील जिस से इगतपुरी और कासारा को पानी जाता है यहां से आधे मील पर है इगतपुरी से २ मील पिम्परी और ३ मील पर बगोली म दो मेले सितम्बर और फर्वरी में होते हैं जिन में हिन्दू लोग जाते हैं ॥

इगतपुरी जी० आई० पी० रेलवे में बम्बई से ८५ मील है डाक गाड़ी में तीसरे दरजे का किराया १।~) और सवारी गाड़ी में ॥।~) लगता है। स्टेशन पर बैल गाड़ियां और कभी कभी तांगे सवारी के लिये मिलते हैं ॥

इटाकोट ।

मदरास रेलवे की साऊथ वेस्ट लाइन पर मदरास से ४६२ मील एक स्टेशन है मदरास से तीसरे दरजे का किराया ४॥।~) है यहां देवालाय वेत्ताकरू देवता का मन्दिर है जिस को उरबासाकात्र कहते हैं। इस मन्दिर के दर्शन करने को लोग महे, कालीकट, कुरुबंदी, तिरूटी, बदानारा, पलेश्वरी और नकामोर से साल भर आते रहते हैं। मन्दिर के गिर्द वाले मकानों पर तांबे की छत्त और बाज़ों पर खपरेल हैं ॥

इटावा ।

ईस्ट इण्डियन रेलवे पर कलकत्ते से ७२० मील एक नगर है कलकत्ते से तीसरे दरजे का किराया ६॥=)॥ हैं। मुग़लों के ज़माने में यहां एक मुसलमान हाकम रहता था। अब ज़िला इटावा का सिवल स्टेशन है देसीयों की वसती जमनाजी के उत्तर की तर्फ आध मील के फासले पर वाके है और रेल के स्टेशन से एक मील है पहले यहां लुटेरे लोग आबाद थे जो मित्र और दुशमन को एक समझते थे ॥

ग्यारहवीं सदी के शुरू में महमूद ने और १४८६ में महम्मद गौरी ने इस ज़िले पर हमला किया और १५२८ में बाबर ने इस शहर को फतह करके अपने मुल्क में शामिल कर लिया और अकबर के वक़्त में शहर और ज़िला दोनों आगरे के साथ मिल गये अजीब बात यह है कि यहां मुग़लों का राज्य बड़ी देर तक रहा पर मुसलमानों के पास जागीर बहुत कम है अकसर ज़िमीदार लोग कनौजीये ब्राह्मणों की औलाद हैं इटावा में देखने वाले यह मुक़ाम हैं किला टूटी फुटी हालत में है पर मालूम होता है कि किसी ज़माने में बहुत मज़बूत था, जामा मसजिद एक मन्दिर, हियूमगंज यह बहुत बड़ा है और शहर के बीच में वाके है। इस में अनाज और रूई की मण्डियां हैं, मजिस्टरेटी, थाना, मिशन हाऊस, असपताल पास ही हियूम हाई स्कूल है इन सब जगहों के नाम हियूम साहब के नाम पर जो यहां के कलक्टर थे रक्खे गये हैं। इटावा से ग्वालीयर, फर्रुखाबाद, आगरा, मैनपुरी को बड़ी अच्छी पक्की सड़कें जाती हैं। सिवल स्टेशन रेलवे स्टेशन के पास कसबे के उत्तर पश्चिम की तर्फ है यहां की सड़कें अच्छी हैं और उन पर दोनों तर्फ दरख़्त लगे हुए हैं ॥

१८५७ में बाग़ियों ने दो दफ़ा इस ज़िले पर हमला किया सिवल के अफ़सर मजबूर हो कर आगरे चले गये पर शहर के लोग सरकार के वफ़ादार रहे ॥

इटावा में घी, रुई, अनाज, सरसों का इस्ट इण्डियन रेलवे, जमना और गंगा जी की नहर के रस्ते बड़ाही ब्योपार होता है। यहां एक डाक बंगला है और शहर में देसियों के लिये बड़ी भारी सराय है जमना जी के किनारे हर साल में तीन मेले होते हैं। धर्मशाला बहुत हैं और एक धर्मशाला स्टेशन के पास बन रही है जो थोड़े दिनों में तैयार हो जायेगी ॥

इरोद (या इरोदू)।

अहाता मद्रास के ज़िला कोएम्बाटोर में एक नगर, और मद्रास रेलवे का स्टेशन और साऊथ इण्डियन रेलवे का जकंशन है मद्रास से २४३ मील और तीसरे दर्जे का किराया २॥-) है। त्रिचनापली, तंजोर और साऊथ इण्डियन रेलवे के और और स्टेशनों के जाने वालों को यहां गाड़ी बदलनी चाहिये स्टेशन से २ मील पर मशहूर कावेरी दरिया है जिस को हिन्दू लोग पवित्र मानते हैं और हज़ारों स्नान के लिये आते हैं ॥

स्टेशन के पास देसियों के लिये कई होटल हैं स्टेशन के पास एक चोलतरी भी है जिस में लोग तीन दिन तक बिना किराये ठहर सकते हैं इरोद से कुछ मील के फ़ासले पर कावेरी और भवानी के संगम पर भवानी मुक़ाम भी पवित्र माना जाता है।

इरोद में डिप्टी कलकटर, तहसीलदार, सबमाजिस्टरेट और मुन्सिफ़ की कचहरियां हैं यहां हर वृहस्पत के दिन मेला होता है और रुई और केला बहुत पैदा होता है ॥

इरंदोल ।

अहाता बम्बई ज़िला खांदेश के सब डिवीज़न खांदेश का बड़ा नगर है और जी० आई० पी० याने बम्बई की बड़ी लायन की शाख जलगांव आमालनर पर स्टेशन है दिल्ली से भुसावल के रस्ते ७२६ मील है तीसरे दर्जे का किराया डाक गाड़ी में ६।-) और सवारी गाड़ी में ७।) है और बम्बई से भुसावल के रस्ते ३११ मील है तीसरे दर्जे का किराया डाक गाड़ी में ४।।) और सवारी गाड़ी में ३।-) लगता है इरंदोल रोड स्टेशन से २५ मील अदावद के उत्तर की तरफ़ और सतपुड़ा पर्ब्बत के नीचे उनावदेव के गर्म पानी के सोते हैं गर्म पानी एक पुराने मन्दिर के नीचे से एक चौकोर छेद में से निकलता है सोतों के ऊपर से मन्दिर को एक अजीब पक्का रास्ता जाता है ॥

इरंदोल में रुई और रुई के बीजा का ब्योपार होता है

इरंदोल रोड स्टेशन पर बैल गाड़ीयां इरदोल नगर जाने के लिये मिलती हैं नगर में एक धर्मशाला मुसाफ़िरों के ठहरने के लिये है ॥

इन्दौर ।

रियासत इन्दौर की राजधानी है महाराजा साहिब और रेज़ीडैन्ट साहिब इसी जगह रहते हैं नगर थोड़े दिन का बना हुआ है अहल्या बाई ने बसाया था यह समुन्द से २००० फ़ीट ऊंचो और सुथरी जगह पर बसा है बड़ा भारी महल जिस का दरवाज़ा ऊंचा और कई मन्ज़िल का है शहर में हर तरफ़ से दिखाई देता है लाल बाग़ जिस में गरमी में रहने का महल और चिड़िया घर बना हुआ है। टकसाल, बाज़ार, रुई की कलें देखने के लायक़ हैं रेलवे स्टेशन महल से क़रीब एक मील के फ़ासले पर है रेज़ीडेनसी एक

हुई है। राजकुमार कालिज जहां मालवा के राजों के लड़के पढ़ते हैं रजीडेंसी के अहाते में है।

इन्दौर अजमेर से ३०७ मील और बम्बई से ५४२ मील है तीसरे दरजे का किराया २॥।ॐ) और ४॥ॐ) है॥

यहां दो धर्मशाला हैं एक तो स्टेशन के पीछे ५०० गज़ के फासले पर है और दूसरी शहर में स्टेशन से चौथाई मील के फासले पर है। एक और बड़ी सुन्दर धर्मशाला बन रही है॥

इन्द्रपुर भवन।

सूबा आगरा और अवध के लिये और तहसील सहारनपुर में एक गांव है और सहारनपुर से १८ मील के फासले पर वाक़े है॥

यहां अक्तूबर के शुरू में शाकम्भरी देवी का बड़ा भारी मेला होता है जो ६ दिन तक रहता है इस मेले में ५०० के क़रीब रेल में और बहुत से लोग सड़क से आते हैं॥

सहारनपुर से इन्द्रपुर तक बैल गाड़ियां जाती हैं पर घोड़ा गाड़ियां कलसिया से आगे नहीं जा सक्ती क्योंकि आगे सड़क कच्ची है॥

इन्द्रपुर में कोई सराए या धर्मशाला नहीं॥

सहारनपुर दिल्ली से ११२ मील है तीसरे दरजे का किराया १।ॐ) है॥

इमलोता।

रियासत झींद की दादरी तहसील में गांव है जो बी० बी० एन्ड सी० आई रेलवे याने बम्बई की छोटी लाईन की फाज़िलका शाख के चरखी दादरी स्टेशन से ४ मील के फासले पर वाक़े है वहां सितम्बर महीने के दूसरे हफ्ते में माल मण्डी लगती है जो १४ दिन

तक रहती है। इस में करीब २ हज़ार लोग और १५ हज़ार पशु आते हैं हमलोते में सराय या धर्मशाला कोई नहीं, मेले के दिनों में झोपड़ियां डाल दी जाती हैं॥

चरखी दादरी स्टेशन रेवाड़ी से ३५ मील और दिल्ली से ८७ मील है तीसरे दरजे का किराया ।~)॥ और ॥≡)॥ लगता है॥

उच्च ।

सूबापंजाब रियासत बहावलपुर तहसील अहमदपुर में एक पुराना कसबा मुलतान से ७० मील के फासले पर दरिया पंजनद पूर्व के किनारे पर वाक़े है नार्थ वेस्टर्न रेलवे की लाहौर करांची लैन पर अहमदपुर से १४ मील है कहते हैं उच्च उसी मुक़ाम पर वाक़े है जहां सिकन्दर आज़म ने पंज नद पर एक शहर बसाया था यह भी कहते हैं कि यह वही कसबा है जिस को रशीद उद्दीन ने उन चार रियास्तों में से जो वयंदकफंद के मातहत थीं एक का दारुल खिलाफा लिखा है इस को महमूद गज़नवी और महम्मद गौरी ने फतह किया और नसीरुद्दीन कुबाच की हकूमत में शुमाली सिंध का एक मशहूर शहर होगया और बहुत से हेर फेर के बाद अकबर के ज़माने में मुग़लिया सलतनत में पक्के तौरपर शामिल किया गया मुसलमान लोग इस जगह को पुराना होने और उन बड़े बड़े आदमियों का जिन का तवारीखों में ज़िकर है जनम भुमी होने के सबब आदर करते हैं॥

हर साल अपरैल के दूसरे हफते यहां पीर सैयद जलाल की यादगारी में बड़ा मेला लगता है जिस में ८०००० के करीब हिन्दू और मुसलमान आते हैं॥

उच्च में कोई सराए नहीं लेकिन उच्च के लोग मेले में आने वालों को घर देते हैं जिनका किराया मेले के दिनों के लिये ६) या ७) रुपये होता है अहमदपुर स्टेशन से टट्टू और ऊंट सवारी के लिये मिलते हैं॥

उच्च में खजूर बहुत होती हैं और उन के पत्तों के पंखे खूबसूरत बनते हैं

अहमदपुर लाहौर से ३०१ मील है और चीनीगोट स्टेशन ३१६ मील है लाहौर से तीसरे दरजे का किराया ३।)॥ और ३॥=)। है॥

उज्जैन ।

यह नगरी आज कल महाराजा सिन्धिया की रियासत में है, उज्जैन महाभारत के जमाने में बड़ा भारी और मशहूर शहर था उस जमाने में इसके कई नाम थे याने अवन्ती, अवनतीका, बशाखा, पुष्पा क्रन्तीनी ॥

उज्जैन बुद्ध और जैनियों का बड़ा तीर्थ है वहां पर महा काल नाम एक शिवजी का मन्दिर है एक और मन्दिर भी है जिस को कद्राश कहते हैं इन के सिवा और बहुत मन्दिर हैं जो देखने के लायक हैं ॥

सिप्रा नदी के दक्षिण की तरफ एक जगह भैरवगढ़ के नाम से मशहूर है यह जगह देखने के लायक है उज्जैन श्री कृष्ण जी और उनके साथी बलदेव वगैरह सांधीपनी मुनि जी के पास पाठाभ्यास करने आया करते थे इस वास्ते वह तीरथ बहुत मशहूर है और पुराने ज़माने में हिन्दुस्तान देश का आक्सफोर्ड यूनिवर्स्टी था ॥

उज्जैन नगरी के पास छिपरा नदी के किनारे पर राजा भरतरी की सुरंग है जिस में राजा भरतरी और उनके गुरू गोरख नाथ की मूर्ति है इन के सिवा और बहुत से बुत और शिव लिंग की मूर्त्तियां हैं।

नई उज्जैन नगरी से थोड़ी दूर आगे राजा बिक्रमाजीत जी की पुरानी उज्जैन के एक गोल गढे में दस बारह हाथ नीचे उतरने से निशान मिलते हैं ॥

बड़ा बाज़ार खुला है और उस में दो मंज़िल के मकान हैं नए शहर के दखिन की तरफ जैपुर के महाराजा जैसिंह की आकाश लोचन है ॥

यहां से अफीम बाहर जाती है और अंग्रेज़ी वस्तु खासकर कपड़ा बाहर से आता है यहां रूई दबाने। रूई निकालने और कपड़ा बुनने की कलें भी हैं, गवालियर के महाराजा साहिब का महिल स्टेशन से दो मील है ॥

स्टेशन पर मुसाफिर खाना और खाने का कमरा बना हुआ है और पास ही एक सराए और डाक बंगला है ॥

उज्जैन बम्बई से बी० बी० एण्ड सी० आई रेलवे में ४६८ मील है तीसरे दरजे का किराया ४॥।-) लगता है ॥

उड़ीसा की खोहें

यह खूबसूरत पहाड़ियों के एक झुंड के दरमियान वाक़े है यह पहाड़ियां महानदी दरिया के डेलटा के साफ मैदान में खड़ी हैं इस जगह राजा अशोक । एक कतबा मिलता है बुध की लोथ जलाते ही उसका एक दांत यहां लाया गया था उदयागिरि पहाड़ी में छोटी २ कोठडियों के सिवा १६ बड़ी बड़ी खोहें हैं जिस खोह को रानी का नूर याने रानी का महल कहते हैं वह सबसे खूबसूरत है इसकी दो मञ्जिलें हैं और एक चौकोना आंगन के तीन तर्फ बनी हुई है। दीवारों पर संगतराशी की हुई है ॥

उदैपुर

राजपूताना में मेवाड या उदैपुर रियासत की राजधानी है। शहर की जगह और महल जो भील पर एक छोटी सी पहाड़ी पर

वाक़े है हिन्दुस्तान में बहुत खूबसूरत है जब १५६८ ई० में अकबर ने चितौड़गढ लिया तो मेवाड के महाराना ऊदैसिंह ने यहां आकर पहाड़ों में बचाओ की जगह बनाई और फिर यहां एक नगर बस गया जिस का नाम महाराना ने अपने नाम पर ऊदैपुर रक्खा ॥

१५७७ ई० में मशहुर महाराना परताबसिंह के वक़्त में ऊदैपुर में अकबर की फ़ौज रही पर परताबसिंह ने १५८६ में अपनी राजधानी को फिर ले लिया १७६९ में माधोजी सिंधिया ने ऊदैपुर को घेर लिया लेकिन दीवान ऊमरावचन्द की हिम्मत से और मुलक का कुछ अच्छा हिस्सा देकर बच गया ॥

ऊदैपुर पूर्व की तरफ़ से भला मालूम होता है। राना साहिब और राज अधिकारियों के महल जगन्नाथ जी का बड़ा भारी मन्दिर मुसाहबों और अमीरों के घर बड़े खूबसूरत मालूम होते हैं ॥

ऊदैपुर से १२ मील उत्तर की तरफ़ एक तंग घाटी में महादेवजी या ईश्वर का लिङ्ग मन्दिर है यहां महादेवजी को लोग एकलिङ्ग या चौमुखी ईश्वर मानते हैं उनकी मुर्त्ती के ४ चेहरे हैं मूर्त्ती के सामने नादा बैल की कांसी की पूरी क़द की मूर्त्ती है मन्दिर और नगर से ३०० या ४०० गज़ के फ़ासले पर एक सुन्दर झील है जिस पर बहुत से मन्दिर बने हैं और इर्द गिर्द पहाड़ियां हैं ॥

उदैपुर बी० बी० ऐण्ड सी० आई० रेलवे की शाख उदैपुर चितोडगढ पर स्टेशन है चितौडगढसे ६९ मील और अजमेर से १८५ मील है तीसरे दर्जे का किराया ॥≈)॥ और १॥।≈)॥ है शहर के पास जो स्टेशन से २ मील है अच्छी सराय और धर्मशाला बनी हुई हैं तांगे और बैल गाड़ियां स्टेशन पर और शहर में मिलती हैं ॥

उद्‌वदा ।

बी० बी० ऐण्ड सी० आई० रेलवे याने बम्बई की छोटी लैन

पर एक स्टेशन और गांव है गांव स्टेशन से चार मील के क़रीब है यहां पारसी लोग आबाद हैं और एक अग्नि का मन्दिर है यह मन्दिर हिंदुस्तान देश में सब से पुराना बताते हैं हज़ारों पारसी अदर (मई जून) और अरदी बहिस्त (अकतूबर नवम्बर) के महीनों में यात्रा के वास्ते यहां जाते हैं ॥

इस गांव में एक धर्मशाला और आठ बंगले हैं जिन में पारसी लोग बिना किराया दिये ठहर सकते हैं तांगे और गाड़ियां स्टेशन पर मिलता हैं ॥

उदवदा बम्बई से ११५ मील है तीसरे दरजे का किराया १।=) लगता है ॥

ऊंजालूर

साऊथ इण्डियन रेलवे पर मदरास बीच जंकशन स्टेशन से ३१६ मील के फ़ासले पर स्टेशन है मदरास बीच से तीसरे दर्जे का किराया ३॥-) लगता है ॥

इस गांव में हर मङ्गल के दिन मेला लगता है स्टेशन से ३ मील पश्चिम की तरफ़ कोटईमारियम्मन का मन्दिर है जहां हर मङ्गल के दिन पूर्णमासी के पूरे चन्द्रमा के सालाना मेले पर जो फ़रवरी मार्च में होता है भेड़ें भैंसे भेट दिये जाते हैं ॥

स्टेशन से थोड़े फ़ासले पर एक चतरम है जहां ब्राह्मणों को मुफ़्त खाना मिलता है स्टेशन से पौन मील के फ़ासले पर एक डाक बंगला भी है स्टेशन के पास एक पक्का मकान है जिसमें देसी लोग ठहर सकते हैं सवारी स्टेशन पर मिलती है ॥

उरुली।

जी० आई० पी० याने बम्बई की बड़ी लायन पर स्टेशन है और भीमा दरिया के पास बसा है, स्टेशन पर वेटिंगरूम बना हुआ है यहां से १२ मील तले गांव में एक बड़ा मन्दिर है जहां गुजरात से बहुत यात्री जाते हैं यहां से १२ मील जेजूरी जगह है जिसे हिन्दू लोग बड़ा पवित्र मानते हैं। बैल गाड़ियां पहले से बन्दोबस्त करने से मिलती हैं किराया फी गाड़ी २) लगता है स्टेशन के पास एक बड़ा मन्दिर है जिस में लोग ठहरते हैं और स्टेशन से क़रीब आधे मील के फासले पर नहर वालों का बंगला है॥

उरुली बम्बई से १३७ मील है डाक गाड़ी में तीसरे दरजे का किराया २=) और सवारी गाड़ी में १।=) लगता है॥

उम्लावापाडू।

शाही सड़क के ऊपर मदरास अहाते में एक छोटा गांव और मदरास रेलवे का स्टेशन है यह गांव रायापुरम मदरास से १५६ मील है और तीसरे दरजे का किराया २-) है॥

यहां विष्णु का एक मन्दिर है जिस का अपरैल या मई के महीने में मेला होता है और यहां एक चोलत्री है जिस में मुसाफिरों को बिना दाम खान्न मिलता है॥

उरछा।

जी० आई० पी० रेलवे पर झांसी से ७ मील और स्टेशन से ५ मील के फ़ासले पर एक पुराना नगर है पहले उरछा रियासत की राजधानी था अब टीकमगढ़ जो यहां से ४० मील के क़रीब है रियासत की राजधानी है॥

स्टेशन से इस नगर तक कच्चा रस्ता जाता है जिस पर गाड़ी मुशकिल से चल सक्ती है इस नगर का गिर्दा ३ मील है और इस के गिर्द पत्थर की बड़ी भारी दिवाल बनी हुई है जिस में ऊंचे दर्वाज़े हैं इस को राजा रुद्रपर्तापसिंह ने १५३१ में बसाया और करार किले को छोड़ कर इस को अपनी राजधानी बनाया था महलों और राजों की समाधों के सबब जो दरया के किनारे बनी हैं यह नगर बड़ा सुन्दर मालूम होता है इस जगह एक बड़ा मन्दिर भी है जिस को चत्रभुज कहते हैं किले और नगर के बीच में पुल बना है यहां एक खूबसूरत महल भी अब तक मौजूद है जब जहांगीर बादशाह मिलने आया तो राजा बीरसिंह देवने इस महल को बादशाह के आश्रम के वास्ते बनवाया था॥

ऊरछाका महाराजा बुन्देलखण्ड के सब राजों से बड़ा माना जाता है अगस्त के महीने में यहां बड़ा भारी बेतवा दरया में स्नान का मेला होता है॥

झांसी से तीसरे दरजे का किराया ー)॥। लगता है॥

ऊरछा में कोई सराय या धर्मशाला नहीं लोग या तो मन्दिर में ठहरते हैं या अपना और बन्दोबस्त करते हैं॥

एटाकोलम ।

मदरास रेलवे का स्टेशन मदरास से ३८२ मील है तीसरे दरजे का किराया ४) है यहां से आधे मील के फासले पर एक बड़ा मशहूर विष्णु जी का मन्दिर है जिस को थिरुनाबाइ कहते हैं यह मन्दिर ग्रथा पुजई दरया के किनारे बना हुआ है जनवरी फरवरी जूलाई और अक्तूबर के महीनों में नये चंद्रमा के तेहवार के मौकों पर तलीचरी, कनानोर, कालीकट, शोरानूर और दूसरी जगहों से बहुत

या.ी आते हैं। अप्रैल के महीने में एक बड़ा भारी तेहवार होता है जो १० दिन तक रहता है और जिस में अनगिनत यात्री आते हैं॥

स्टेशन से एक मील के फ़ासले पर एक धर्मशाला है जहां सिर्फ़ ब्राह्मण ठहर सक्ते हैं। और कोई धर्मशाला नहीं॥

एमनाबाद।

सूबा पंजाब के ज़िला और तहसील गुजरांवाला में पुराना कसबा है आईने अकबरी में लिखा है कि उस वक़्त यह एक महाल बाने माली डिवीज़न का हैडक्वार्टर था और मुसलमानों के अच्छे अच्छे मकानों के अब तक खंडर मौजूद हैं यहां बड़े मशहूर खत्रियों का एक कुटम्ब रहता है॥

अप्रैल में बैशाखी के मौके पर वहां बड़ा भारी मेला लगता है जो दो दिन रहता है २० हज़ार के क़रीब लोग इस मेले पर जमा होते हैं मालमण्डी भी लगती है और इनाम मिलता है॥

नगर स्टेशन से ३ मील है उस में लोगों के टिकने के लिये सराय और धर्मशाला हैं गाड़ी के वक़्त स्टेशन पर यक्के और टमटमें मिलती हैं॥

एमनाबाद लाहौर से ३४ मील है तीसरे दरजे का किराया।=)॥ है।

एलिफन्टा।

बम्बई बन्दर में शहर से ६ मील के फ़ासले पर एक टापू है जिस का गिर्द ५ मील है यहां पर दो पहाड़ियां हैं जिन के बीच में एक तंग घाटी है पुर्तगाल देश के लोगों ने इसका नाम एलिफन्टा रक्खा था क्योंकि यहां जहाज़ों के उतरने की पुरानी जगह के नज़दीक एक बड़ा पत्थर का हाथी खड़ा था॥

यह जज़ीरा खोहों के मन्दिरों के सबब से मशहूर है, इन अजीब खोहों में से चार तो क़रीब करीब पूरी हैं पर पांचवीं बड़ी खोह अब भर गई है, इन में से बड़ी खोह बड़ी पहाड़ी पर सब से अजीब है जहाज़ों से उतरने की जगह से इस के दरवाज़े तक जो पौने मील के क़रीब है एक मोड़दार रस्ता जाता है खोह पक्की चट्टान में खोदी हुई है। इस की लम्बाई चौड़ाई १३० फीट है, दरवाज़े में तीन बड़े बड़े पाख पावे हैं जिन के ऊपर एक चट्टान टिकी हुई है और उस चट्टान के ऊपर हरयावल और फुलदार बेलें उगी हुई हैं खोह अन्दर से चौकोर है और लम्बाई चौड़ाई में करीब ६१ फीट है और पाल पायों की ६ कतारों पर खड़ी है, खोह के अन्दर एक मशहूर और बड़ी त्रिमूर्ति है जिस की संगतराशी निहायत अजीब है, इस में ब्रह्म बनाने वाले, विष्णु पालन करने वाले, और शिव संहार करने वाले की मूर्त्तियां शामिल हैं, मन्दिर के अन्दर जाते हुये दाहने हाथ को एक कमरा है जिस में लिंग है इस कमरे में कई द्वारपाल और और मूत्तियां हैं त्रिमूर्ति के दोनों तर्फ दो कमरे हैं उन में भी बहुत सी संगतराशी की मूर्त्तियां बनी हुई हैं ॥

त्रिमूर्त्ति के पूर्ब की तर्फ के कमरे में शिव जी की मूर्त्ति है जो आधी आदमी की और आधी औरत की है इस मूर्त्ति को अरधनारी कहते हैं, यह मूर्त्ति १० फीट ऊंची है, पश्चिम की तर्फ के कमरों में शिवजी और पारबती जी की मूर्त्तियां हैं और एक और कमरे में पारबती जी की मूर्त्ति शिवजी की मूर्त्ति के दाहने तर्फ खडी है जिस में उन दोनों का ब्याह दिखाया है और खोह के पश्चिम के कमरे में शिवजी की कपाला भरित याने भैरव अवतार की मूर्त्ति है सिर पर एक खोपड़ी है और गले में खोपड़ियों की माला है ॥

यहां कई और भी मन्दिर हैं शिवरात्री तेहवार को यहा बड़ा मेला होता है ॥

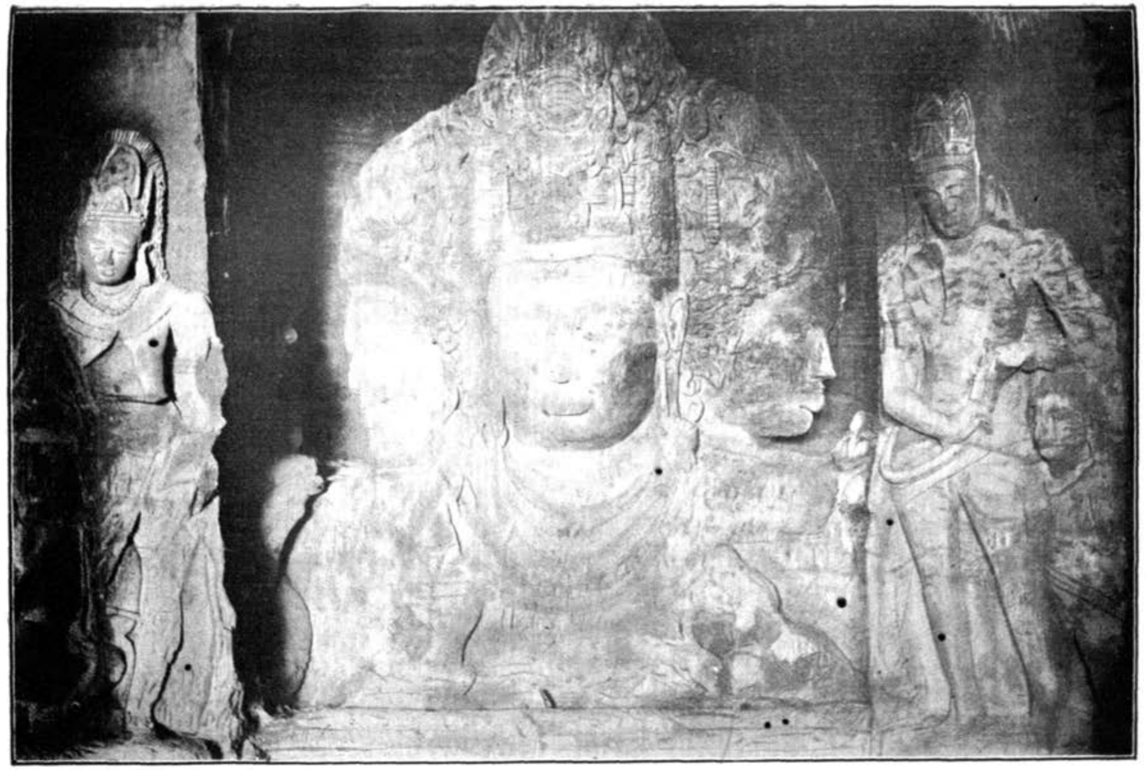


Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

त्रिमूर्ति एलफेंटा की खोहों में।

इस टापू में अपालो बन्दर से अग्नबोट में जाते हैं।

बम्बई कलकत्ते से जी० आई० पी० और ई० आई० रेलवे में १३४६ मील और बी० बी० ऐन्ड सी० आई० और नार्थ वैस्टरन रेलवे में लाहौर से १०६८ मील है। तीसरे दर्जे का किराया १३=) और १०॥) लगता है॥

एलोरा।

हैदराबाद दक्खिन में औरंगाबाद स्टेशन से १३ मील और दौलत आबाद स्टेशन से ७ मील के फ़ासले पर एक गांव है, इस के गिर्द थोड़ी सी दिवार बनी हुई है और अन्दर मुसलमानों की एक खानगाह है जो सारे दखिन में शरीर के रोग दूर करने के लिये मशहूर है॥

यह नगर खोहों के मन्दिरों के सबब बहुत मशहूर है इन के अन्दर देवताओं की मुर्त्तियों के सिवाय जैनियों और बुद्ध लोगों के पूजने की भी मुर्त्तियां हैं, बुद्ध लोगों। ब्राह्मनों और जैनियों की खोहें अलग अलग हैं बुद्ध लोगों की १२ ब्राह्मनों की १७ और जैनियों की ५ खोहें हैं। फरगुसन साहिब लिखते हैं कि सब से बड़ा मन्दिर जिस को कैलास कहते हैं हिन्दुस्तान देश में इमारत के ख़्याल से बहुत अनोखी और देखने के लायक़ है इस की खुबसूरती पर देखने वालों को सदा अचम्भा होता है बाहर की तरफ़ से १३८ फ़ीट और अन्दर की तरफ़ २४७ फ़ीट लम्बा और १५० फ़ीट चौड़ा है और किसी किसी जगह ऊंचाई १०० फ़ीट है कहते हैं कि यह और दूसरे मन्दिर आठवीं सदी ईस्वी के क़रीब एलिचपुर के राजा एदूने बनवाये थे क्योंकि उसका यहां पानी में स्नान करने से एक रोग चला गया था, यह गांव उसी के नाम पर

एलोरा कहलाता है, बड़ा मन्दिर शिव जी का मन्दिर कहलाता है पर उस में विष्णु और देवताओं की भी मूर्तें हैं, मण्डप एक बड़े आंगन पर जो १५४ फ़ीट चौड़ा और २७६ फ़ीट लम्बा है बना हुआ है। साम्हने एक पत्थर का पर्दा है जिस की बाहर की तरफ़ शिवजी की, विष्णु जी की और और मूर्तियां खोदी हुई हैं। पर्दे के बीच में दर्वाज़ा है जिस के दोनों तरफ़ कमरे हैं, आगे जाकर लक्ष्मी और उसके हाथी की मूर्ति है आंगन के साम्हने नादी का मण्डप है और इसके दोनों तरफ़ एक एक पील पावा या दवाजदन्द खड़ा है जो ४५ फ़ीट ऊंचा है, इन पीलपायों की चोटी पर शिवजी के त्रिशूल ४ फ़ीट बाक़ी रह गये हैं ॥

दौलताबाद हिज़हाईनैस निज़ाम की रेलवे का स्टेशन है और हैदराबाद से ३२३ मील है तीसरे दर्जे का किराया ३।~) है ॥

दौलताबाद के स्टेशन मास्टर को एक दिन पहिले खबर देने से खोहों को जाने के लिये तांगे मिल सकते हैं तांगे का किराया १०) रुपया लगता है ॥

स्टेशन के पास एक बगंला है जिस का एक रुपया रोज़ किराया लगता है। एलोरा के पास भी बंगला है पर उस में औरंगाबाद के तालुक़ादार की इजाज़त से ठहर सक्ते हैं ॥

ओंकारजी।

बम्बई अहाते के ज़िला खांडवा तहसील निमर में एक बड़ी पवित्र जगह है और बी० बी० ऐंड सी० आई० (बम्बई की छोटी लायन) के मोर्तक्का स्टेशन से ७ मील है। मोर्तक्का अजमेर से ३५६ मील और तीसरे दर्जे का किराया ३।~) है ॥